अतिथि संपादक की कलम से.....

बलराम अग्रवाल

अभिनन्दन!

'साहित्य रत्न' का यह अंक लगभग वैसा होने के आसार थे, जैसा अब से कुछ दिन पहले रोहित शर्मा, विराट कोहली और जसप्रीत बुमराह सरीखे खिलाड़ियों से विहीन क्रिकेट दल को समझा और कहा जाता रहा था । बहुत-से 'स्टार लघुकथाकार' इस विशेषांक में सम्मिलित नहीं हो पाये थे। यद्यपि खुला आमन्त्रण था, तथापि अनेक कथाकार अपनी रचनाएँ नहीं भिजवा पाये। अक्टूबर 2024 में जारी विज्ञप्ति सम्भवत: बहुत-से मित्रों तक पहुँच ही नहीं सकी और लगता रहा कि यह अंक अनेक ख्यात जनों की चमक से वंचित रह जायेगा। फिर धीरे-धीरे सुहानी हवाएँ आनी शुरू हुईं। सब नहीं आ सके; लेकिन अधिकतर से सहयोग मिला। फाइल समृद्ध होती चली गयी।

दिसम्बर माह की ही किसी तारीख को कनाडा से भाई रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' का फोन आया था। बातों-बातों में मैंने कहा कि 'एक अनजानी-सी ई-पत्रिका के लघुकथा विशेषांक की तैयारी में लगा हूँ।' उन्होंने कहा कि मैदान में पहली बार उतरा हर खिलाड़ी 'अनजाना' ही होता है। परफोर्मेंस ही उसे कपिलदेव, सौरभ गांगुली, सचिन तेंदुलकर, धोनी या बुमराह बनाती है। कोई पत्रिका जब अपने पहले अंक की विज्ञप्ति निकालती है, तब 'अनजानी' ही होती है। सम्पादन और सामग्री उसकी पहचान बनते हैं।' उसके बाद भी उन्होंने अनेक बार फोन करके बड़े

भाई की तरह सम्पादन सम्बन्धी अपने अनुभव साझा किए और तत्सम्बन्धी सावधानियाँ समझाईं। उनका बहुत-बहुत आभार।

प्रिय भाई सुरजीत मान जलईया सिंह के प्रधान सम्पादकत्व और रामावतार बैरवा के सम्पादकत्व में मई 2023 से हर माह प्रकाशित होने वाली इस 'ई पत्रिका' से परिचित कराया भाई डॉ. बिपिन पाण्डेय ने; और सुरजीत मान ने अनुरोध किया कि इस पत्रिका का एक लघुकथा विशेषांक तैयार कर दूँ। निस्सन्देह, मैंने भी इस पत्रिका का नाम पहली ही बार सुना था और इसका कोई अंक देखे बिना ही लघुकथा विशेषांक तैयार करने की हामी भर दी। साहित्य में भी संगीत और नृत्य क्षेत्र की तरह 'घराने' बनाने की कोशिशें होती रही हैं। मोटे तौर पर वाम-घराना और दक्षिण-घराना की मौजूदगी से तो कोई शायद ही इंकार कर पाये। कुछ लोग कहते हैं कि लघुकथा में भी 'घराना पद्धति' विकासमान है। सवाल यह है कि वह यदि अच्छे उद्देश्य से विकासमान है तो हम चिन्तित क्यों हों? यद्यपि साहित्येतर कलाओं को घरानों और गुरु-परम्परा ने ही जीवित रखा हुआ है; तथापि साहित्य उन कलाओं से किंचित भिन्न, वैचारिक स्वतन्त्रता, स्वानुभूत और स्वतन्त्र अभिव्यक्ति का मंच है। यह कलाओं से नहीं; बल्कि कलाएँ इससे जीवन पाती हैं इसलिए घराना पद्धति यहाँ टिक नहीं पाई, ऐसा मेरा मानना है जो गलत भी हो सकता है। साहित्य के क्षेत्र में समय-समय पर विभिन्न 'वाद' उपजते, विकसित होते, सिमटते और काल-कवलित होते रहे हैं।

जनवरी 2025 में प्रकाशित 'साहित्य रत्न' का यह पहला लघुकथा विशेषांक, और कुल मिलाकर 21वाँ पुष्प आपके सम्मुख है। रचनाकारों को यद्यपि अकारादि क्रम में रखने का प्रयास किया गया है, तथापि दो छोटी रचनाओं को एक पृष्ठ पर लगाने की

तकनीकी विवशता के चलते क्रम थोड़ा-बहुत गड़बड़ाया भी है। बहरहाल, रचनाएँ जहाँ भी हैं, अपनी पूर्ण आभा के साथ हैं और पाठक को अपना बना लेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। चयन करने के क्रम में पढ़ते हुए इन लघुकथाओं में से अनेक के लेखकों को तुरन्त फोन करके धन्यवाद देने को बाध्य होना पड़ा। अनेक लघुकथाएँ हैं जो आपको चिन्तन के, मनन के, रसानुभूति के, उद्वेलन के लोक में ले जायेंगी। कुछेक मानवेतर पात्रों की हैं तो कुछेक में दर्शन भी है

भी है; तथापि सब की सब अपने समय के सरोकारों से जुड़ी, अनुभवों की खुरदुरी जमीन पर खड़ी हैं। इनमें एक भी वायवीय नहीं है। आप देखेंगे कि कैसे एक लघुकथा आपके देखते-देखते कहानी, कहानी से उपन्यास और उपन्यास से महाकाव्य का कद पाने की रचनात्मक क्षमता से युक्त हो जाती है। ऐसी रचनाओं को चिह्नित करने का दायित्व पाठक, समीक्षक और आलोचक के नाते आपका है। मैं बस यही कह सकता हूँ कि इस विशेषांक में सम्मिलित लघुकथाओं को लघुकथा साहित्य का आज का चेहरा कहा जा सकता है। आप स्वयं पढ़ें और रेखांकित कर उनके कथाकारों तक अपनी अनुभूतियों और आकलन को पहुँचाएँ।

लघुकथाओं के अन्त में कथाकारों का डाकपता नहीं दिया; क्योंकि अनुभव बताता है कि डाकपता अक्सर स्थाई नहीं रह पाता है। साइबर क्राइम के लगातार बढ़ते खतरों के मद्देनजर मोबाइल नम्बर भी सुरक्षित नहीं रह गया है, इसलिए ई-मेल ही दिया है।

'साहित्य रत्न' के इस विशेषांक के साथ लघुकथा इस सदी के रजत वर्ष '2025' में प्रविष्ट हो रही है। इस मंगल अवसर पर सभी कथाकारों का हार्दिक अभिनन्दन। अन्त में, 'साहित्य रत्न' के सम्पादक प्रिय भाई रामावतार बैरवा को वर्ष 2023-24 के लिए 'हिन्दी अकादमी (दिल्ली) पत्रकारिता सम्मान (इलैक्ट्रिक मीडिया)' दिये जाने पर शतश बधाइयाँ। सभी देशवासियों को अनन्त मंगल कामनाओं के साथ।